# वैदिक साहित्य में प्रयागराज महत्त्व

**प्रयाग शब्दस्य व्युत्पत्तिः**

**इज्यते हविर्दीयिते अत्र यज् धातोः यजयाचयत विच्छ प्रच्छो नङ्इति पाणिनि सूत्रेण नङ्प्रत्ययात् जातः याग शब्दः ।**

**अर्थात हविः द्रव्य विशेषैः रामं कृष्णं नारायम् कश्चिद् देवं वा लोक कल्याणार्थाय सं तर्पयति सः यागः कश्चित् कार्यं विशेषः । प्रकर्षेण इज्यतेऽत्र इति प्रयागः । असौ भगवद्दर्शनं भवति ।**

**शंखस्मृति (१४ वां अध्याय)** प्रयाग में पितरों के निमित्त जो कुछ दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है। गंगा और यमुना के तीर का दान अनन्त फल देता है।

**महाभारत (आदि पर्व -५५ वां अध्याय)** प्रयाग में सोम, वरुण और प्रजापति का जन्म हुआ था।

**महाभारत (वनपर्व ८४ वां अध्याय)** जो पुरुष गंगा और यमुना के संगम में स्नान करता है, उसको १० अश्वमेध का फल होता है, और उसके कुल का उद्धार होजाता है। प्रयाग में देवताओं के साथ विष्णु निवास करते हैं।

**महाभारत (वनपर्व ८५ वां अध्याय)** जिस जगह गंगा और यमुना मिली हैं. वह स्थान पृथ्वी की जंघा है। प्रयाग पृथ्वी की योनि है। प्रयाग, प्रतिष्ठानपुर (अंसी) कम्चलाश्वतर तीर्थ और भोगवती यह ब्रह्मा की बेदी हैं। यहां ऋषिगण ब्रह्मा की उपासना करते हैं। मुनि लोग तीनलोक के तीर्थों में प्रयागको अधिक कहते हैं। यहां राजा वासुकी [ सर्प] का भोगवती नामक स्थान है। प्रयाग ही में गंगा के तट पर दशाश्वमेध नामक तीर्थ है।

गंगास्नान का फल कुरुक्षेत्र के फल के समान है, पर कनखल में विशेष और प्रयाग में बहुत अधिक है। इसी तरह जयपुर गलता स्नान का फल भी अक्षुण्य है। जहाँ पर श्री संप्रदायाचार्य ज.गु.स्वामी श्री रामानन्दाचार्य जी के प्रशिष्य श्री कृष्णदास पयहारी जी संस्थापित पीठ श्री कीलदेवाचार्य के नाम से श्री कील जी के द्वारे के नाम से विख्यात है।

महाभारत (वनपर्व ८७ वां अध्याय) लोक-विख्यात गंगा और यमुना के संगम पर पूर्वसमय में ब्रह्मा ने यज्ञ किया था, इसी से इसका नाम प्रयाग हुआ। यहां तपस्वियों से संवित तापसवन तीर्थ है।

महाभारत (उद्योगपर्व-११४ वां अध्याय) गालव ऋषि गरुड़ को साथ ले कर प्रतिष्ठानपुर में राजा ययाति के समीप आए। राजा ने पुत्र उत्पन्न कराने के लिये माघवी नामक अपनी कन्या मुनि को दी। इन गालवऋषि की तपो स्थली राजस्थान जयपुर गलता तीर्थ रही है, जो वर्तमान में रामानन्द सम्प्रदाय की पीठ है।

महाभारत (अनुशासनपर्व-२५ वां अध्याय) माघ के महीने में ३ करोड़ १० हज़ार तीर्थ प्रयाग में एकत्र होते हैं। उस मास में व्रतवान् होकर प्रयाग में स्नान करने से मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्ग लोक पाता है। गंगा यमुना के तीर्थ में एक मास स्नान करने से १० अश्वमेध का फल मिलता है।